Tender Heart High School, Sector - 33 B, Chandigarh

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 82 पर दिए पाठ - 6 'दीपदान' नामक एकांकी के अंतिम भाग का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! 'दीपदान' एकांकी में पन्ना के अद्भुत त्याग और देशभक्ति का चित्रांकन किया गया है। दासी पुत्र बनवीर नगर में एक उत्सव का आयोजन कराता है। पूरा महल रास रंग में डूबा हुआ है। पन्ना रात में उदयसिंह को अकेले जाने से रोक देती है तब उदयसिंह रूठ कर बिना भोजन किए ही तलवार लेकर ज़मीन पर ही सो जाते हैं। रावल सरूप सिंह की लड़की सोना उदयसिंह को ढूँढ़ती हुई वहाँ आती है। पन्ना कुँवर उदयसिंह को उत्सव में न भेजने की बात कहते हुए बताती है कि चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं जौहर की भूमि है। यह सुन सोना शांत होकर चली जाती है।

पन्ना को सामली से विक्रमादित्य की हत्या बनवीर द्वारा किए जाने की बात पता चलती है। वह जानती है कि दासी पुत्र बनवीर उदय सिंह की हत्या कर चित्तौड़ पर निष्कंटक राज्य करना चाहता है। वह किसी भी समय यहाँ आ सकता

है। अचानक उसने तुलजा भवानी का स्मरण किया। उसी समय जूठी पत्तले उठाने वाला कीरतबारी बड़ी- सी टोकरी लेकर आया। पन्ना ने उसी टोकरी में उदय सिंह को लिटाकर बेरिस नदी के किनारे मिलने के लिए कहती है। इस प्रकार कीरत कुँवर को ले महल से निकलने में कामयाब होता है। तब सामली कहती है कि बनवीर को जब कुँवर यहाँ नहीं मिलेंगे तो वह आपको नहीं छोड़ेगा और आपके बिना कुँवर भी जीवित नहीं बचेंगे। तब पन्ना कुँवर की शैय्या पर अपने पुत्र चंदन को सुलाने का कठोर निर्णय कर लेती है। तब चंदन आता है। उसके पैर से खून बहता देख वह उस पर पट्टी बाँधती है और उसे कुँवर की शैया पर गाना गाकर सुला देती है। काली परछाई देख चंदन घबराकर जग जाता है लेकिन पन्ना उसे सुला देती है।

बच्चो ! अब एकांकी को पृष्ठ संख्या 107 से पढ़ेंगे व समझेंगे। पन्ना चंदन को सुलाने के लिए गीत गाती है। उसका हृदय बहुत दुःखी हो रहा है कि वह अपने पुत्र का बलिदान कर देगी और साथ ही संतोष भी है कि अपने बेटे का बलिदान करके उसने चित्तौड़ के कुँवर की रक्षा कर ली। चंदन के सो जाने के पश्चात् बनवीर एकाएक मदिरा के नशे में लड़खड़ाते हुए कक्ष में प्रवेश करता है। वह कूटनीतिज्ञ है। अच्छी चालें चलना उसे अच्छी तरह से आता है। कक्ष में प्रवेश करते ही वह पन्ना धाय की प्रशंसा करता है और कहता है कि सारे राजपुताने में एक ही धाय माँ है। मैं ऐसी धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ। पन्ना बनवीर को बताती है कि आज उसके कुंवर भूखे ही सो गए हैं। बनवीर यह सुनकर कहता है कि आज तो उत्सव का दिन है। वह बताता है कि आज इतने लोगों ने भोजन किया और राजकुमार भूखा ही रह गया। सबूत

के तौर पर वह बताता है कि तुमने आज कीरत बारी की टोकरी नहीं देखी ,जो इतनी पत्तलों से भरी हुई थी। उसने इतनी पत्तलें तो ज़िंदगी भर भी नहीं उठाई होंगी। आज तो वह जीवन भर के लिए थक गया होगा।

पन्ना किसी तरह उसे टालना चाहती है कि वह यहाँ से चला जाए ताकि उसके पुत्र के प्राणों की रक्षा हो सके। बनवीर नृत्य महोत्सव की भव्यता का बखान करता है। पन्ना उसे बताती है कि सोना बुलाने के लिए आई थी लेकिन कुंवर जी का मन अच्छा न होने के कारण मैंने उन्हें नहीं भेजा। बनवीर आश्चर्य से कहता है कि तुमने आज का दीपदान नहीं देखा, तो पन्ना कहती है कि मेरे लिए दीपदान देखने की बात नहीं, करने की बात है अर्थात् मैं किसी और के द्वारा किए दीपदान को देखने वाली स्त्री नहीं हूँ बल्कि मैं स्वयं दीपदान करती हूँ। अपने कर्तव्य पूरे करती हूँ।

बनवीर के अनुसार धाय माँ तो अच्छे कार्यों की देवी है जो दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। बनवीर पन्ना धाय को अपनी कूटनीति में शामिल होने के लिए प्रलोभन देते हुए उन्हें मारवाड़ में एक जागीर देने और उनका मंदिर बनवाने का लालच देता है। पन्ना ने जब चीखकर बनवीर कहा तो वह अट्टहास करके बोला कि तुमने महाराज बनवीर नहीं कहा। मेरे कहने मात्र से क्या तुम सचमुच की देवी हो गई हो। तुम्हारे हृदय में कुँवर के प्रति जो ममता है और राज्य के प्रति जो मोह है, उससे दूर हो जाओ। तुम मुझे कुँवर दे दो। मैं उनकी तलवार से हत्या कर दूँगा।

पन्ना जानकर भी बनवीर से पूछती है कि तुम्हारी तलवार पर रक्त क्यों लगा है तो बनवीर कहता है कि रक्त तो तलवार की शोभा होती है अर्थात् तलवार का कार्य ही रक्त बहाना है। जिस प्रकार सुहागिन की माँग पर सदा

कक्षा - दसवीं **शिक्षिका** - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - 6 'दीपदान')

सिंदूर लगा होता है उसी प्रकार तलवार भी अनंत सुहागिन है जब तक तलवार जीवित है अर्थात् सही सलामत है तो उस पर सिंदूर की रेखा के समान रक्त लगा रहता है।जो तलवार किसी का खून न बहाए क्या ऐसी तलवार को तलवार कहा जा सकता है।

जब पन्ना बनवीर से तलवार को म्यान में रखने के लिए कहती है तब बनवीर पन्ना की ममता पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि जिस तलवार से चित्तौड़ में कोई नहीं डरता, उससे तुम्हें डर लगने लगा है क्योंकि तुम्हारी ममता ने तुम्हें कमज़ोर बना दिया है। तलवारें आसानी से म्यान में नहीं रखी जाती हैं। जिसकी हत्या करने के लिए वह बाहर निकली है ,उस कार्य को पूर्ण करके ही वह म्यान में जाती है। म्यान में जब राज्यश्री भर जाती है अर्थात् सत्ता का सौभाग्य भर जाता है तो उस समय तलवार म्यान से बाहर निकल आती है क्योंकि राज्य को संभालने और बचाए रखने के लिए तलवार को हर क्षण तैयार रहना पड़ता है।

पन्ना बनवीर को किसी प्रकार टालना चाहती है इसलिए वह उसे आधी रात हो जाने के कारण विश्राम करने के लिए कहती है लेकिन बनवीर कहता है कि मैं विश्राम नहीं कर सकता क्योंकि मुझे तो इस राज्य की सत्ता को पाने के लिए बहुत लंबी यात्रा करनी है और वह अपने साथ कुंवर उदय सिंह को भी ले जाना चाहता हूँ। पन्ना बनवीर की इस बात का विरोध करती हुई कहती है कि वह उसे कुँवर के साथ नहीं जाने देगी।

बनवीर पन्ना को प्रलोभन देने में लगा है किन्तु पन्ना उसके दिए प्रलोभन को अस्वीकार करती हुई कहती है कि राजपूत क्षत्राणी व्यापार नहीं करतीं, वे तो केवल युद्ध करती है या जौहर कर चिता पर चढ़ती हैं।

बनवीर कहता है कि दोनों में से तुम किसी पर नहीं चढ़ सकती अर्थात् तुम युद्ध करके वीरगति को पाना चाहती हो, वह तुम्हें नहीं मिलेगा और न ही तुम स्वयं अपनी चिता पर चढ़ सकती हो क्योंकि तुम्हारा महल चारों तरफ़ से सैनिकों से घिर गया है।

पन्ना ने जानकर भी बनवीर से महाराज विक्रमादित्य के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वे अब इस संसार में नहीं हैं। पन्ना द्वारा हत्यारा कहने पर बनवीर क्रोधित होता है और कहता है कि मेरे विरुद्ध जो विद्रोह करेगा या इस प्रकार की बातें करेगा, उसकी जीभ ही काट दी जाएगी। तुम महाराणा विक्रमादित्य का नाम बार-बार क्यों ले रही हो, वे तो भूत-प्रेतों के लोक में चले गए हैं। तुम जीवित लोक में हो अतः मेरा नाम की जय-जयकार करो। पन्ना उसे धिक्कारते हुए कहती है कि तुम जैसे क्रूर को तो जन्म देने वाली माँ को ही मार देना चाहिए था।

बनवीर पन्ना को धमकी भरे स्वर में कहता है कि तुम जैसी बच्चे को पालने वाली साधारण दासी महाराणा बनवीर से इस प्रकार बात नहीं कर सकती। पन्ना उसे कहती है कि तुम जैसा नीच, नरक मे रहने योग्य महाराणा विक्रमादित्य की हत्या करने के बाद कुँवर उदय सिंह को छू भी नहीं सकता।

बनवीर बताता है कि मैं कुँवर को नहीं देखूँगा। विक्रमादित्य के रक्त से लिपटी मेरी तलवार अब कुँवर के रक्त से ही धोयी जाएगी।

पन्ना बनवीर से विनती करती है कि तुम तो उदयसिंह के संरक्षक हो। तुम उसकी हत्या कैसे कर सकते हो। तुम सारा राज्य ले लो पर कुँवर उदय सिंह को जीवित छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिनी हो जाऊँगी अर्थात्

यहाँ से चली जाऊँगी। सांसारिक भोग-विलास से उन्हें दूर कर दूँगी, और तीर्थों में वास कर लूँगी। कुँवर अपना राज्य कभी नहीं माँगेगे।

वह कुँवर के प्राणों की भिक्षा माँगती हुई कहती है कि तुम्हारे माथे पर मुकुट सजा रहे लेकिन मेरा कुँवर मेरी गोद में रहे अर्थात् तुम राज्य करो परन्तु कुँवर को जीवित रहने दो।

पन्ना की इन बातों को सुनकर बनवीर कहता है कि इस नाटक का मुझ पर कोई असर नहीं होगा क्योंकि जब तक उदय सिंह जीवित है, तब तक यह राज्य मेरा नहीं हो सकता। कुँवर उदयसिंह की हत्या ही मेरे राजसिंहासन की ओर जाने वाली सीढ़ी है। वह कुँवर उदय सिंह की शैया की ओर बढ़ता है। वह देखता है कि पन्ना धाय ने कुँवर को सुला दिया है ताकि उन्हें मरने का कष्ट न हो। उस निद्रा में ही वे मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ। वह पन्ना को सामने से हट जाने के लिए कहता है ताकि वह कुँवर को हमेशा के लिए सुला सके।

पन्ना बनवीर को क्रूर, नीच एवं नरक प्राप्त करने योग्य कहती है। वह उस पर आक्रमण करती है लेकिन उसके आक्रमण को बनवीर अपनी ढाल पर ही रोक लेता है। बनवीर हँसते हुए कहता है कि दासी क्षत्राणी, तुम्हारी कटार अब मेरे हाथ में है। अब तुम किससे आक्रमण करोगी? क्या मैं अब तुम्हें भी समाप्त कर दूँ फिर वह स्वयं से कहता है कि मैं स्त्री पर हाथ नहीं उठाता। बनवीर की इस बात पर पन्ना कहती है कि तुम स्त्री पर हाथ नहीं उठाते लेकिन अबोध (नादान) बालक पर सोते हुए वार करते तुम्हें तकलीफ़ नहीं होगी।

बनवीर कुँवर की शैया के समीप जाता है और

सोए हुए कुँवर उदय सिंह को अपने मार्ग का काँटा कहता है क्योंकि जब तक कुँवर उदयसिंह जीवित हैं, तब तक वह चित्तौड़ का शासक नहीं बन सकता। जिस प्रकार चित्तौड़ में आज स्त्रियों ने तुलजा भवानी के आगे मयूर पक्ष कुंड में दीपदान किया है, मैं (बनवीर) भी आज यमराज के आगे महाराणा साँगा के कुल के दीपक का दीपदान करूँगा। मैं कुँवर उदयसिंह को दीपक मानकर यमराज के समक्ष इनका दान करूँगा। इसे स्वीकार कर लो।

पन्ना बहुत रोती-चिल्लाती है परन्तु बनवीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह चंदन को उदयसिंह समझकर उस पर तलवार से ज़ोर से प्रहार कर चंदन की हत्या कर देता है। पन्ना ज़ोर से चीखकर मूर्छित हो जाती है। कमरे में मंद लौ से दीपक जलता रहता है।

एकांकी में तीन दीपदान हुए हैं। पहला स्त्रियों ने तुलजा भवानी के सामने मयूर पक्ष कुंड में दीपों का दान किया। दूसरा दीपदान पन्ना धाय ने मातृभूमि के लिए अपने पुत्र चंदन के रक्त का दान किया। तीसरा दीपदान बनवीर ने महाराणा साँगा के कुल का दीपक मानकर यमराज के आगे चंदन का दीपदान किया।

बच्चो ! आज हमारी यह एकांकी समाप्त हो चुकी है। आप सभी एकांकी को पुन: ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तथा पूर्णतया से समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"चली गई ! कहती है, ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी। जो मुझे करना है, वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी!

तुमने मेरे हृदय को कैसे कर दिया ? मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ।"

प्रश्न (i) उपर्युक्त कथन किसने, किस संदर्भ में कहा है ?

प्रश्न (ii) 'जो मुझे करना है, वह सामली सुन न सकेगी' - वक्ता क्या कहना चाहता है ?

प्रश्न (iii) पन्ना ने राजवंश की रक्षा किस प्रकार की ?

प्रश्न (iv) पन्ना का बलिदान अभूतपूर्व कैसे था ?

धन्यवाद ।